Scholar Name :- Poonam Rani

Supervisor Name :- Prof. Durga Prasad Gupt

Department of Hindi, Faculty of Humanities and Languages

Jamia Millia Islamia, New Delhi-25

Title:- Yashpal Ke Upanyason Mein Nihit Samajik-Sanskritik Mulyon Ka Adhyayan

शोध–सार

मूल्य–परिवेश, समय और समाज से संबंधित होते हैं। मूल्य समाज की वह रीढ़ है, जिसके सहारे समाज अस्तित्ववान होता है। समाज में मूल्य सदा बनते–मिटते आए हैं। प्रत्येक समाज अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप मूल्यों का निर्धारण करता है। मूल्य केवल कल्पित अथवा निराधार नहीं होते, अपितु इनकी जड़ें बहुत गहरी होती हैं। मानव समाज का अभिन्न अंग है तथा सभी प्राणियों में श्रेष्ठ होने के नाते मूल्य मानव से संबंधित हैं।

मूल्यों में परिवर्तन की स्थिति देखते हुए मूल्यों को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम स्थिर मूल्य एवं द्वितीय गतिशील मूल्य। स्थिर मूल्यों के अन्तर्गत वे मूल्य आते हैं, जिनमें परिवर्तन बहुत कम होता है और होता है तो भी लम्बे समय के पश्चात्। इस श्रेणी में नैतिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक मूल्य आते हैं। बहुत से सामाजिक मूल्य भी इस श्रेणी में आते हैं; जैसे रीति–रिवाज, रूढ़ियों और प्रथाओं पर आधारित मूल्य। गतिशील मूल्यों की श्रेणी में वे मूल्य आते हैं, जिनमें परिवर्तन की प्रक्रिया अपेक्षाकृत शीघ्र होती है; जैसे राजनीतिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, खान–पान एवं रहन–सहन से संबंधित मूल्य। ये मूल्य परिस्थिति, देश एवं काल के साथ परिवर्तित होते रहते हैं। वैज्ञानिक विचारधारा से संबंधित कुछ मूल्य परिवर्तन मूल्यों की श्रेणी में रखे जा सकते हैं।

मनुष्य सर्जनशील प्राणी है। अपने जीवन को उत्तम बनाने के लिए मनुष्य ने मूल्यों का पालन किया। भारतीय समाज और संस्कृति के अपने कुछ मूल्य हैं, जिनमें प्रमुख हैं – उदारता, मानवता, सहिष्णुता, समन्वय, परोपकार आदि। भारतीय संविधान में भी इन मूल्यों को मान्यता प्राप्त है। आज जरूरत इस बात की है कि हम जीवन–मूल्यों के संबंध में फिर से विचार करें अर्थात् चिंतन–मनन करें।

साहित्य में मूल्याभिव्यक्ति की जो परम्परा वैदिक काल से शुरू हुई वह संस्कृत साहित्य से होते हुए आज हिंदी साहित्य में व्यापक रूप में दिखाई पड़ती है। आधुनिक युग में उपन्यास इस परम्परा को बखूबी निबाह रहा है। भारतीय समाज में सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्य तीव्र

गति से संक्रमित हो रहे हैं। परम्परागत मूल्यों का स्थान नए मूल्यों ने ले लिया है। संक्रमण की यह गति धीमी हो तो कोई ज्यादा फर्क नहीं पड़ता परन्तु आज सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यों में तीव्र गति से संक्रमण हो रहा है।

यशपाल धर्म, नैतिकता, नारी, प्रेम, स्त्री–पुरुष संबंध, यौन–भावना, विवाह, विवाह–विच्छेद आदि पर मार्क्सवादी दृष्टिकोण से दृष्टिपात किया है। यशपाल सामाजिक मूल्यों के प्रति भी नई विचारधारा को अपनाते हैं। वे समाज में परम्परा से चले आ रहे सामाजिक मूल्यों के स्थान पर समय और परिस्थिति के अनुकूल नए सामाजिक मूल्यों की स्थापना के पक्षधर हैं। यशपाल के उपन्यासों में सामाजिक समानता, पारिवारिक संबंधों का निर्वाह, स्त्री के प्रति सम्मानभाव, समष्टि का भाव और संघर्ष और पुरुषार्थ आदि सामाजिक मूल्य स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हैं। वहीं यशपाल अपने उपन्यासों में परम्परागत समय से चले आ रहे सांस्कृतिक मूल्यों के स्थान पर नए संस्कृतिक मूल्यों को स्थान देते हैं। उनके उपन्यासों में धार्मिकता, शांतिप्रियता, कर्मण्यता, अहिंसा, साहस, नैतिकता, विश्वबंधुत्व आदि सांस्कृतिक मूल्य स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हैं।

प्रत्येक रचनाकार अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए भाषा का सहारा लेता है। साहित्कार का भाव पक्ष और सामाजिक बोध समयानुसार परिवर्तित होते रहते हैं। इसके साथ ही भाषा और शिल्प भी परिवर्तित होते रहते हैं। यशपाल ने जनभाषा का समर्थन किया है। अपनी भाषा को जीवंत बनाने के लिए उन्होंने उदारतापूर्वक विभिन्न क्षेत्रों और समाज के विभिन्न स्तरों से शब्द–चयन किया है। भाषा को आकर्षक बनाने हेतु लेखक अलंकारों, लोकोक्तियों आदि का प्रयोग करता है। भाषा में रोचकता और प्रभविष्णुता का होना अनिवार्य है। जब भाषा पात्रानुकूल, प्रसंगानुकूल मोड़ लेती है, उसमें स्वाभाविकता आ जाती है। भाषा के विभिन्न रूपों की दृष्टि से लेखक ने अपने उपन्यासों में समन्वित भाषा, सामान्य भाषा, उर्दू भाषा, अंग्रेजी भाषा, मिश्रित व लोकभाषा जैसे रूपों को अपनाया है।

अतः कहा जा सकता है कि यशपाल ने साम्यवादी जीवन–दृष्टि की इसी पीठिका पर अपने तमाम स्त्री–पुरुष पात्रों की सर्जना की है। वे धर्म, नैतिकता, प्रेम, विवाह, यौन–संबंधों आदि के संदर्भ में अपने व्यक्तित्व–विकास में बाधक परम्परागत समाज–सम्मत मानव–मूल्यों को चुनौती देते हुए नवीन मूल्यों का आह्वान करते हैं। उनके चारित्रिक आक्रोश विद्रोह ने नए सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यों की रचना की है।